''उत्तराखण्ड राज्य में जनसंख्या वृद्धि का बदलता परिदृश्य''

चन्द्र बल्लभ[1], विकास सिंह राणा[2], आदर्श पन्त[3]

[1]शोध छात्र, भूगोल विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड
[2]शोध छात्र, भूगोल विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड
[3]परास्नातक छात्र, भूगोल विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

शोध सारांश

जनसंख्या किसी भी भौगोलिक क्षेत्र एक महत्वपूर्ण घटक होता है। सामान्य रूप से यह किसी क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की संख्या है। जनसंख्या में गतिशीलता होती है तथा किसी क्षेत्र की जनसंख्या में कालीक परिवर्तन आते रहते हैं। ये परिवर्तन अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इनसे उस क्षेत्र की आर्थिक उन्नति, सामाजिक सांस्कृत स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि तथा राजनैतिक दशाओं का पता चलता है। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। अर्थात ''किसी निश्चित समय अन्तराल में किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है।'' यह परिवर्तन धनात्मक वृद्धि एवं ऋणात्मक वृद्धि दोनों रूपों में हो सकता है।

जनसंख्या परिवर्तन के घटक

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन मूलतः **प्रजननता, मर्त्यता एवं प्रवास** का परिणाम होता है।

1. **प्रजननता** – साधारणतः प्रजननता का तात्पर्य किसी स्त्री या स्त्री समूह के द्वारा किसी निश्चित समयावधि में जन्में सजीव शिशुओं की संख्या से है। यह स्त्री की उत्पादकता को बताता है। इसे जीवित शिशुओं संख्या के आधार पर मापा जाता है। प्रजननता से जनसंख्या में वृद्धि होती है।
2. **मर्त्यता** – मृत्यु एक जैविकीय घटना है, जिससे सजीव शरीर का अन्त होता है। किसी निश्चित समयावधि में किसी क्षेत्र में होने वाली मृत्युओं की संख्या मर्त्यता कहलाती है। इससे जनसंख्या में कमी आती है।
3. **प्रवास**– मानव अथवा मानव समुदाय जब किसी कारण से किसी स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान बस जाते हैं तो यह प्रक्रिया प्रवास कहलाती है। प्रवास के दो रूप हैं, उत्प्रवास तथा आप्रवास। जब कोई व्यक्ति अपना मूल स्थान छोड़कर जाता है तो इसे उत्प्रवास तथा जिस नवीन स्थान पर जाकर वह बसता है तो इसे आप्रवास कहते हैं।

किसी भी क्षेत्र के जनसंख्या विश्लेषण में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके द्वारा उस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण को समझा जा सकता है, साथ ही जनांकिकीय तथ्यों की भी जानकारी प्राप्त होती है। जिनसे उस क्षेत्र के विकास हेतु बनायी गयी योजनाओं का आधार प्राप्त होता है।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तराखण्ड भारत का 27वाँ राज्य है जिसकी स्थापना 09 नवम्बर सन् 2000 को हुई थी। उत्तराखण्ड राज्य $28^{o}43'$ से $31^{o}27'$ उत्तरीय अक्षांशों तथा $77^{o}34'$ से $81^{o}02'$ पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है। यह उत्तर में तिब्बत क्षेत्र, पूर्व में नेपाल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश राज्य, पश्चिम तथा उत्तर पश्चिम में हिमाचल प्रदेश राज्य तथा दक्षिण पश्चिम में हरियाणा राज्य से घिरा है। उत्तराखण्ड राज्य का कुल क्षेत्रफल 53483 वर्ग किमी0 है। उत्तराखण्ड को गढ़वाल तथा कुमाँऊ दो मुख्य भागों में बाँटा गया है। उत्तराखण्ड में कुल 13 जिला हैं जिनमें से सात जिले उत्तरकाशी, चमोली, टिहरी, पौड़ी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग, देहरादून तथा हरिद्वार गढ़वाल में तथा छः जिले अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथौरागढ़, नैनीताल, चम्पावत तथा ऊधमसिंह नगर कुमाँऊ में स्थित हैं। उत्तराखण्ड के जिलों में दो जिले हरिद्वार तथा ऊधमसिंह नगर पूर्ण रूप से मैदानी हैं, दो जिले देहरादून तथा नैनीताल पर्वतीय–मैदानी हैं तथा शेष नौ जिले पर्वतीय हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य की कुल जनसंख्या 10086292

है। जिसमें 5137773 पुरूष तथा 4948519 स्त्री जनसंख्या है। राज्य का जनसंख्या घनत्व 189 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। राज्य की 69.77% जनसंख्या ग्रामीण तथा 23.23% जनसंख्या नगरीय है। 2001–2011 के दशक में राज्य की कुल जनसंख्या वृद्धि दर 18.81% रही है।

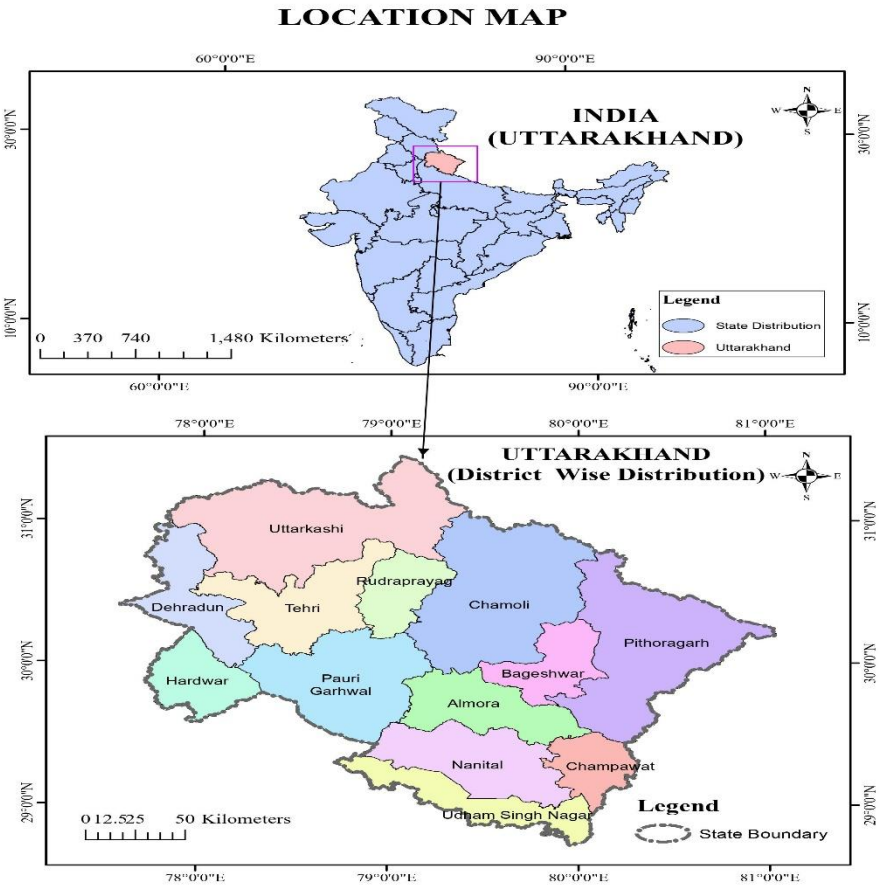

चित्र 1.1 अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

उत्तराखण्ड में जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

राज्य में जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को चार वर्गो में बाँटा जा सकता है।

1. **जैविकीय कारक** – प्राकृतिक रूप से स्वतः ही जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक जैविकीय कारक होते हैं। ये कारक प्रजननता एवं मर्त्यता से सम्बन्धित होते हैं। उत्तराखण्ड में जन्मदर एवं मृत्युदर ऐसे ही कारक हैं।

2. **सामाजिक कारक** – सामाजिक स्थिति के अनुरूप भी जनसंख्या में परिवर्तन आता है। ये कारक किसी भी समाज तथा संस्कृति से जुड़े होते हैं। विषम भौगोलिक परिस्थिति, प्राकृतिक आपदायें, धार्मिक–सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल विवाह, परिवार नियोजन, पेयजल समस्या आदि विभिन्न सामाजिक कारक हैं जो राज्य की जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

3. **आर्थिक कारक** – किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या का विशेष महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहता है। रोजगार, व्यापार एवं वाणिज्य, कृषि की लाभदेयता, उपजाऊ भूमि, कृषि विकास, परिवहन एवं संचार तथा वन संसाधन आदि उत्तराखण्ड में जनसंख्या वृद्धि के प्रभावी कारक हैं।

4. **जनांकिकीय कारक –** ये कारक जनसंख्या से सम्बन्धित हैं। साक्षरता, लिंगानुपात, जनसंख्या घनत्व, ग्रामीण–नगरीय संघटन, धार्मिक संघटन, आयु संघटन जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

तालिका 1.1

उत्तराखण्ड में जिलेवार जनसंख्या वृद्धि दर सन् 1991 से 2001 तक

जिला	जनसंख्या वृद्धि दर 1991-2001
उत्तरकाशी	22.72
चमोली	13.51
रूद्रप्रयाग	13.44
टिहरी गढ़वाल	16.15
देहरादून	24.71
पौड़ी	3.87
पिथौरागढ़	10.92
चम्पावत	17.56
अल्मोड़ा	3.14
बागेश्वर	9.21
नैनीताल	32.88
उधमसिंह नगर	27.79
हरिद्वार	26.3

स्रोत – भारत की जनगणना 2001

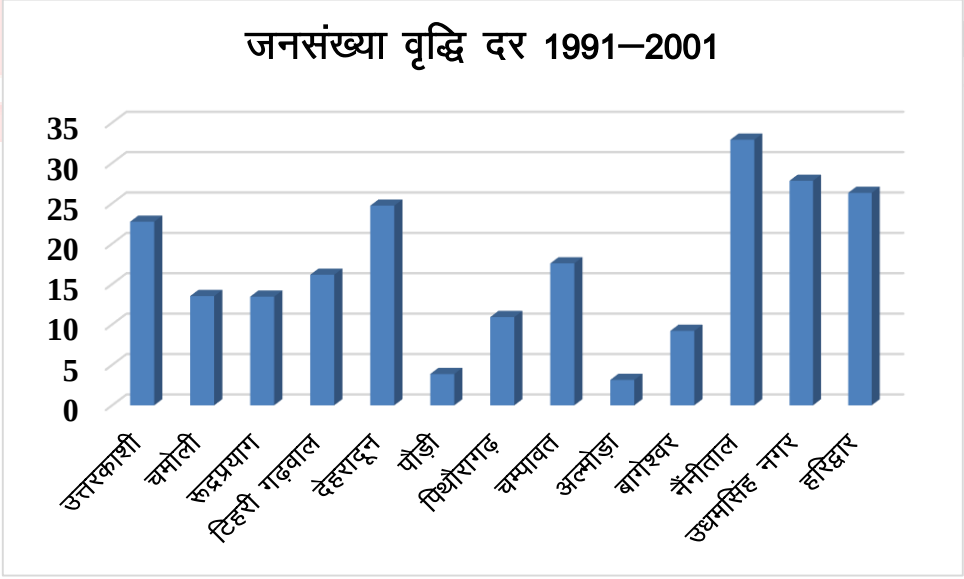

चित्र 1.2

तालिका 1.1 में यह देखा जा सकता है कि 1991 से 2001 के दशक में उत्तराखण्ड राज्य में नैनीताल जिले को छोड़कर सभी जिलों में जनसंख्या वृद्धि दर 30 प्रतिशत से कम रही है। नैनीताल में यह सर्वाधिक 32.88 प्रतिशत रही है जबकि अल्मोड़ा में यह सबसे कम 3.14 प्रतिशत रही है। इस दशक में उत्तराखण्ड की औसत दशकीय वृद्धि दर 20.41 प्रतिशत रही है। तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि नैनीताल (32.88%), उधम सिंह नगर (27.79%), हरिद्वार (26.3%), देहरादून (24.71%),तथा उत्तरकाशी

(22.72%) पाँच जिले 20 प्रतिशत से अधिक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले हैं। चम्पावत (17.56%), टिहरी (16.15%), चमोली (13.51%), रूद्रप्रयाग (13.44%), तथा पिथौरागढ़ (10.92%) की जनसंख्या वृद्धि दर 10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक है। राज्य के तीन जिलों बागेश्वर (09.21%), पौड़ी (03.87%) तथा अल्मोड़ा (03.14%) में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 10 प्रतिशत से कम रही है।

उत्तराखण्ड राज्य में जनसंख्या वृद्धि (2001 से 2011 तक)

तालिका 1.2 से यह स्पष्ट है कि 2001 से 2011 के दशक में उत्तराखण्ड राज्य में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 18.81 प्रतिशत रही है। जिसमें सर्वाधिक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर ऊधमसिंह नगर जिले में 33.45 प्रतिशत है जबकि पौड़ी गढ़वाल जिले में यह सबसे कम –1.41 प्रतिशत है। जनपद पौड़ी तथा अल्मोड़ा में तो 2001 की तुलना में 2011 में जनसंख्या में कमी आयी है। तालिका 1.2 में देखा जा सकता है कि पर्वतीय जिलों में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर कम तथा मैदानी जिलों में वृद्धि दर अधिक है।

तालिका 1.2 से स्पष्ट है कि इस दशक में ऊधमसिंह नगर (33.45%), देहरादून (32.33%), हरिद्वार 30.63%) 30 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या वृद्धि वाले जिले हैं। नैनीताल (25.13%), चम्पावत (15.63%), उत्तरकाशी (11.89%) तीन जिले 10 से 30 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले हैं। रूद्रप्रयाग (06..53%), चमोली (05.74%), पिथौरागढ़ (04.58%), बागेश्वर (04.18%), टिहरी गढ़वाल (02.35%), अल्मोड़ा (–1.28%) तथा पौड़ी (–1.41%) 10 प्रतिशत से कम जनसंख्या वृद्धि वाले जिले हैं।

तालिका 1.2

उत्तराखण्ड में जिलेवार जनसंख्या वृद्धि दर सन् 2001 से 2011 तक

जिला	जनसंख्या वृद्धि दर 2001-2011
उत्तरकाशी	11.89
चमोली	5.74
रूद्रप्रयाग	6.53
टिहरी गढ़वाल	2.35
देहरादून	32.33
पौड़ी	-1.41
पिथौरागढ़	4.58
चम्पावत	15.63
अल्मोड़ा	-1.28
बागेश्वर	4.18
नैंनीताल	25.13
उधमसिंह नगर	33.45
हरिद्वार	30.63

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

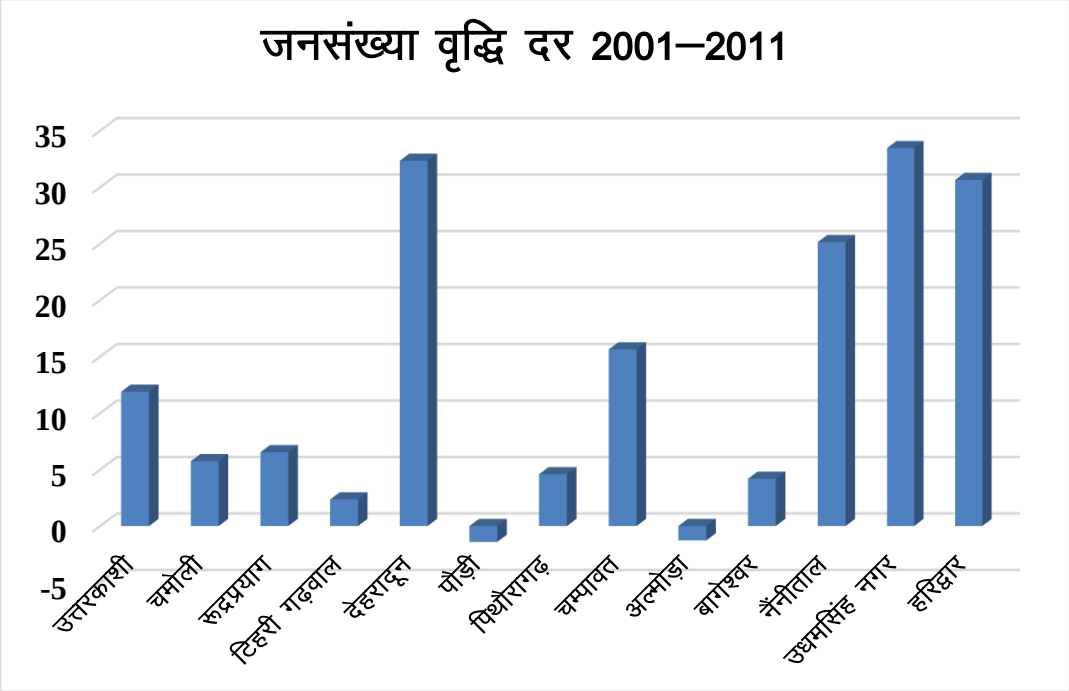

चित्र 1.3

उत्तराखण्ड राज्य में दशकीय जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 1.3 के आधार पर 1991 से 2001 के दशकों में उत्तराखण्ड के सभी जिलों की जनसंख्या वृद्धि दर का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। स्पष्ट है कि अधिकांश पर्वतीय जिलों की जनसंख्या वृद्धि में तुलनात्मक कमी आयी है। जबकि मैदानी जनपदों देहरादून, हरिद्वार तथा ऊधमसिंह नगर की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देखी गयी है। तालिका 1.3 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है उत्तराखण्ड राज्य में जनसंख्या वृद्धि का परिदृश्य परिवर्तित हो रहा है तथा राज्य के तीन मैदानी जिलों देहरादून, हरिद्वार तथा ऊधमसिंह नगर में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में 2001 की तुलना में 2011 की जनगणना में बढ़ोत्तरी हुई है यह वृद्धि 4 प्रतिशत से 8 प्रतिशत तक देखी गयी है जबकि शेष 10 जिलों में दशकीय वृद्धि दर में 2001 की तुलना में 2011 में कमी आयी है। इन जिलों में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में 2 प्रतिशत से 14 प्रतिशत तक कमी देखी गयी है।

तालिका 1.3

उत्तराखण्ड में जिलेवार जनसंख्या वृद्धि दर सन् 1991 से 2011 तक		
जिला	जनसंख्या वृद्धि दर	
	1991-2001	**2001-2011**
उत्तरकाशी	22.72	11.89
चमोली	13.51	5.74
रूद्रप्रयाग	13.44	6.53
टिहरी गढ़वाल	16.15	2.35
देहरादून	24.71	32.33
पौड़ी	3.87	-1.41
पिथौरागढ़	10.92	4.58
चम्पावत	17.56	15.63
अल्मोड़ा	3.14	-1.28
बागेश्वर	9.21	4.18
नैंनीताल	32.88	25.13
उधमसिंहनगर	27.79	33.45
हरिद्वार	26.3	30.63

स्रोत – भारत की जनगणना 2001, 2011

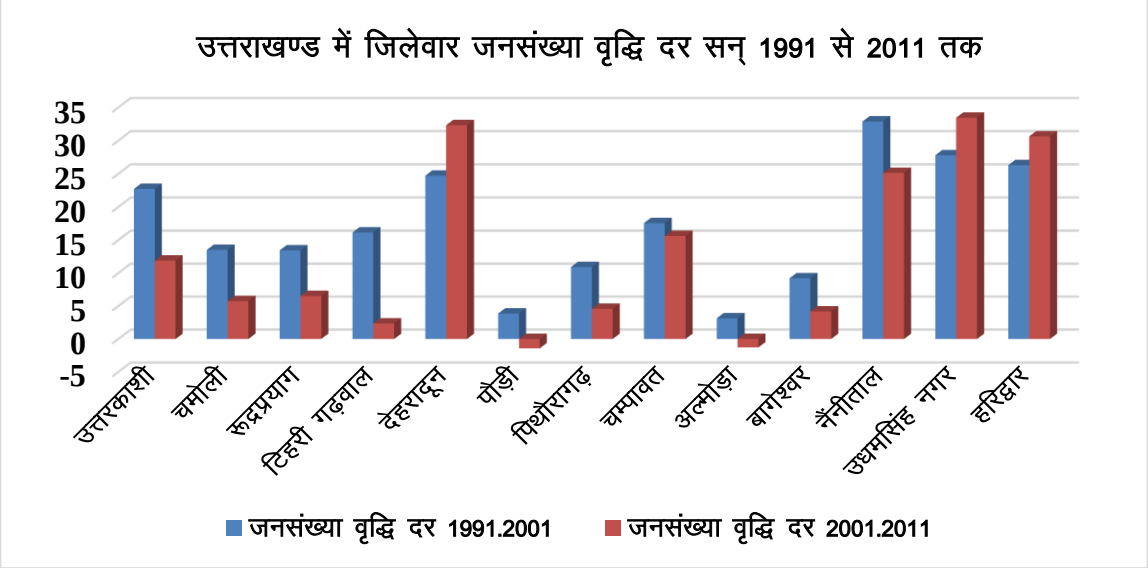

चित्र 1.4

उत्तराखण्ड राज्य में 2001–2011 की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर तालिका 1.2 का विश्लेषण कर उत्तराखण्ड के जनपदों को जनसंख्या वृद्धि दर के आधार पर तीन वर्गो में बाँटा जा सकता है।

1. उच्च जनसंख्या वृद्धि दर (25 प्रतिशत से अधिक)
2. मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर (5 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक)
3. न्यून जनसंख्या वृद्धि दर (5 प्रतिशत से कम)

1–उच्च जनसंख्या वृद्धि दर (25 प्रतिशत से अधिक)

तालिका 1.4 उत्तराखण्ड राज्य में ऊधमसिंह नगर, देहरादून, हरिद्वार तथा नैनीताल उच्च जनसंख्या वृद्धि वाले जिले हैं। ऊधमसिंह नगर में यह 33.45%, हरिद्वार में 30.63% तथा नैनीताल में 25.13% हैं। ये सभी जिले 25% से अधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले हैं। ये अधिकांश रूप से मैदानी क्षेत्र हैं तथा इनमें उच्च जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारण प्रवास, औद्योगिक विकास, कृषि विकास, नगरीकरण, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएँ आदि हैं।

तालिका 1.4

उच्च जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले 2001–2011	
जिला	25 प्रतिशत से अधिक
उधमसिंह नगर	33.45
देहरादून	32.33
हरिद्वार	30.63
नैनीताल	25.13

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

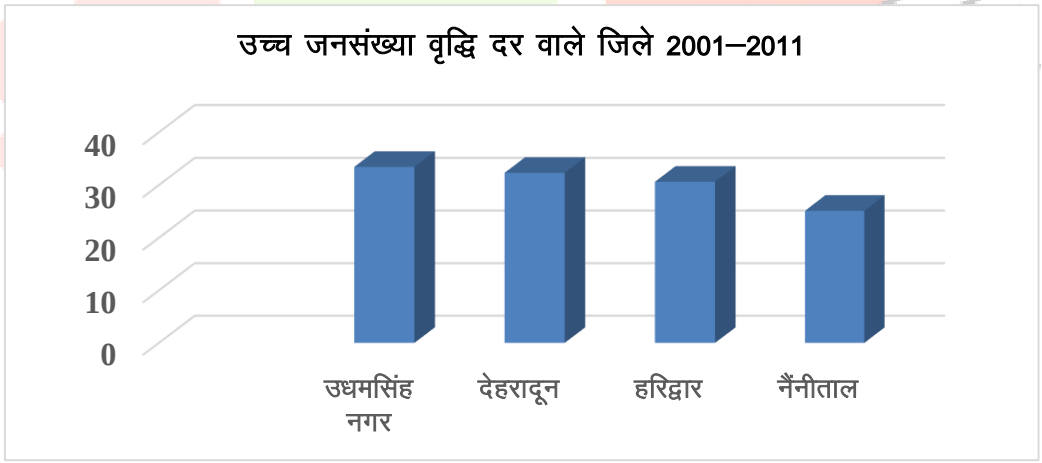

चित्र 1.5

2– मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर (5 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक)

तालिका 1.5 राज्य में चम्पावत, उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग तथा चमोली चार जिले 5 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले हैं। चम्पावत में यह दर 15.63 प्रतिशत, उत्तरकाशी में 11.89 प्रतिशत, रूद्रप्रयाग में 06.53 प्रतिशत तथा चमोली में 05.74 प्रतिशत रही है। ये सभी जिले पर्वतीय क्षेत्र में स्थित हैं जनगणना के आंकड़ो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इन जिलों में मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर है जो धीरे–धीरे कम होती जा रही है।

तालिका 1.5

मध्यम जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले 2001–2011	
जिला	5–25 प्रतिशत
चम्पावत	15.63
उत्तरकाशी	11.89
रूद्रप्रयाग	6.53
चमोली	5.74

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

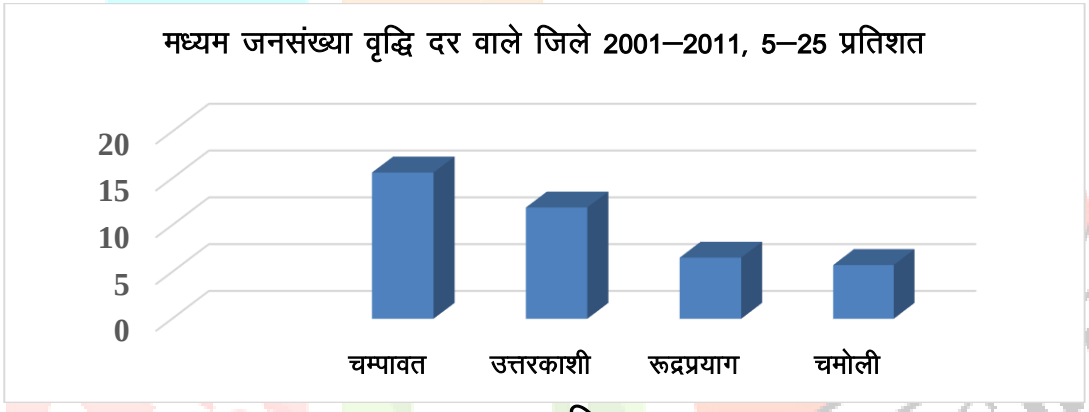

चित्र 1.6

3– न्यून जनसंख्या वृद्धि दर (5 प्रतिशत से कम)

उत्तराखण्ड राज्य में न्यून जनसंख्या वृद्धि के वर्ग में पाँच जिले पौड़ी, अल्मोड़ा, टिहरी, बागेश्वर तथा पिथौरागढ़ हैं। तालिका 1.6 से स्पष्ट है कि पौड़ी तथा अल्मोड़ा जिलों में जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि देखने को मिलती है। पौड़ी में यह सबसे कम –1.41 प्रतिशत तथा अल्मोड़ा में –1.28 प्रतिशत है। टिहरी (02.35%), बागेश्वर (04.18%) तथा पिथौरागढ़ (04.58%) भी 5 प्रतिशत से कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि वाले जिले हैं। इस वर्ग के जिलों में न्यून जनसंख्या वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण कारण पर्वतीय क्षेत्रों से होने वाला पलायन है। जिसके मुख्य कारण अस्थापना विकास की कमी, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के साधनों का अभाव, प्राकृतिक आपदायें आदि हैं।

तालिका 1.6

निम्न जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले 2001–2011	
जिला	5 प्रतिशत से कम
पिथौरागढ़	4.58
बागेश्वर	4.18
टिहरी गढ़वाल	2.35
अल्मोड़ा	-1.28
पौड़ी	-1.41

स्रोत – भारत की जनगणना 2011

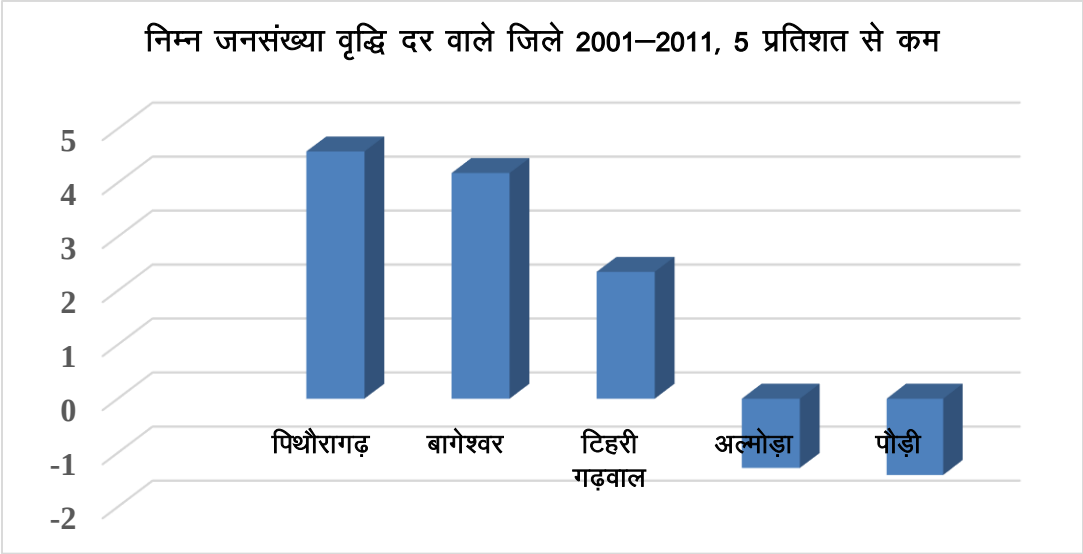

चित्र 1.7

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड में जनसंख्या परिवर्तन विभिन्न अवस्थाओं में है। राज्य में 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या में 18.81 प्रतिशत की वृद्धि हुई ह, जिसमें क्षेत्रीय आधार पर पर्याप्त अंतर मिलता है। जिसका सबसे बड़ा कारण अन्तर्राज्यीय प्रवास है। प्रायः यह देखने में आया है कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय भागों से मैदानी (तराई) क्षेत्रों की ओर तेजी से पलायन हो रहा है तथा पर्वतीय क्षेत्रों के कई गाँव खाली हो चुके हैं। इसका मुख्य कारण अच्छी सम्भावनाओं की तलाश माना जा सकता है। उत्तराखण्ड की जनसंख्या 2001 में लगभग 84 लाख थी जो कि 2011 में बढ़कर एक करोड़ से अधिक हो चुकी है।

यदि उत्तराखण्ड की जनसंख्या के जनगणना 2011 आंकड़ों का विश्लेषण किया जाये तो स्पष्ट है कि राज्य के 11 जिलों में जनसंख्या वृद्धि धनात्मक रही है जबकि 2 जिलों अल्मोड़ा तथा पौड़ी गढ़वाल में यह ऋणात्मक है, जिसका तात्पर्य यह है कि विगत एक दशक में दोनों जिलों की जनसंख्या कम हुई है। जनगणना के आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या

की औसत वृद्धि दर 12.75 प्रतिशत है जबकि मैदानी क्षेत्रों में यह लगभग 32 प्रतिशत है। जिसका मूल कारण मैदानी क्षेत्रों में होने वाला नगरीकरण, औद्योगिक विकास तथा पड़ौसी राज्यों से होने वाला प्रवजन है। विगत दशक में राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि वाला जिला ऊधमसिंह नगर रहा है जो कि मैदानी क्षेत्र में स्थित है तथा यहाँ पर औद्योगिक विकास तथा कृषि की लाभदेयता उत्तम है। देहरादून तथा हरिद्वार दो अन्य उच्च जनसंख्या वृद्धि वाले जिले हैं जिनकी जनसंख्या वृद्धि अधिक होने के मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्रों होने वाला पलायन, मूलभूत सुविधाओं की आपूर्ति, अन्य राज्यों से होने वाला प्रवजन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की उपलब्धता आदि हैं।

पौड़ी तथा अल्मोड़ा जिलों की ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण पलायन को माना जा सकता है क्योंकि यहाँ से बड़ी संख्या में लोग दिल्ली, देहरादून, हरिद्वार, काशीपुर, हल्द्वानी, रूद्रपुर आदि मैदानी नगरों की ओर प्रवासित हुए हैं। इनके प्रवास का मुख्य कारण रोजगार के साधनों की कमी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, पेयजल समस्या विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ आदि हैं।

यदि उत्तराखण्ड राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा परिवहन संचार की सुविधाओं को बेहत्तर बनाया जाये तो राज्य में होने वाले अन्तर्राज्यीय प्रवास को कम किया जा सकता है। जिससे उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली जनसंख्या वृद्धि की विषमता कम हो सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. भारत की जनगणना, 2001
2. भारत की जनगणना, 2011
3. मौर्य, एस0डी0, जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
4. क्लार्क, जॉन आई0 पॉपुलैशन ज्योग्राफी, ऑक्सफोर्ड
5. पंत, बी0आर0 & चन्द, आर0, उत्तराखण्ड जनसंख्यात्मक झलक
6. चाँदना आर0सी0, जनसंख्या का भूगोल कल्याणी प्रकाशन, लुधियाना
7. हुसैन, एम0, जनसंख्या भूगोल, रावत प्रकाशन, जयपुर
8. मैठाणी डी0डी0, प्रसाद जी0 & नौटियाल आर0, उत्तराखण्ड का भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद